13.56 hrs

MOTION *RE* REPORT OF THE COMMISSIONER FOR LINGUISTIC MINORITIES—*contd.*

Mr. Deputy-Speaker. The House will now proceed with further consideration of the motion moved by Shri Datar on the 8th September regarding the Report of the Commissioner for Linguistic Minorities for the period 30th July, 1957 to 31st July 1958, laid on the Table of the House on the 8th May 1959, together with the two amendments moved thereon

Shri Panigrahi may continue his speech

Shri Panigrahi (Puri) Mr Deputy-Speaker, yesterday I was trying to explain as to how this special officer, the Commissioner for Linguistic Minorities had failed to discharge his duties properly in so far as the safeguarding of the rights of the minorities was concerned We shall judge the success of the Commissioner by seeing whether his appointment has created confidence in the minds of of the linguistic minorities

If we go through the Report, we will find that many of the linguistic minorities in the different States do not even know of the creation of this post of Commissioner for Linguistic Minorities So the Government must have taken adequate steps to inform the different linguistic minorities in the different States about the creation of this post so that they would have been in a position to send petitions direct to the Commissioner But in many places in many States, the linguistic minorities do not yet know that for safeguarding their interests the post of a Commissioner has been created

If we go through the Report, we will find that there is a measure of complacency in it The Commissioner has taken many things for granted. The States may not reply quickly, there may be difficulties in the way of the States replying. Those States which do not reply may be in a difficult position to reply All these things the Commissioner has taken for granted, whereas he has been specifically asked to investigate the difficulties of the linguistic minorities.

We will also find in the Report an attitude of helplessness When the hon Minister spoke, he said that steps were being taken to see that the interests of the linguistic minorities were safeguarded Yesterday I was trying to point out that the Oriya-speaking people in the district of Singbhum and in Saraikella and Kharswan in Bihar and the Urdu-speaking people in Delhi, Bihar and UP are *undergoing serious hardships.* Yesterday my hon friend, Shri Harvani from U P pointed out that the Urdu-speaking minorities are also suffering in U.P

14 Hrs.

But, I would like to appreciate the act of the Commissioner in one instance A news item appeared in the *Statesman* of the 11th March, 1958 regarding some difficulties of the Telugu-speaking minorities of Parlakimedi in Orissa The promptness with which the Commissioner acted is amazing. The newspaper report appeared on the 11th March, 1958; and, on 12th March, 1958, immediately, the Commissioner made an enquiry from the Orissa Government to know what was happening I appreciate the promptness with which he acted I only wish that this promptness should have been extended to all such cases where the linguistic minorities such as the Oriyas and the Bengalis are suffering in Bihar and other places.

What about the complaints of the linguistic minorities of those places? Have they received the attention of the Commissioner? Does the Commissioner read the newspapers which are published in Orissa also or the newspapers which are published outside Orissa—in Bengal—which narrate

[Shri Panigrahi]

the difficulties of the linguistic minorities in those areas? I think the Commissioner should also go through those reports as he cared to go through the report which appeared in the *Statesman.*

With regard to the limitations of the Commissioner I would urge upon the hon. Minister to see that he is invested with more statutory power and authority. At present, the Commissioner feels as if he is obliged only to send reports and to make enquiries by post—sometimes he prefers to go to some places also. I would like to urge upon the hon. Minister that like the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes, this Commissioner for Linguistic Minorities should be vested with certain more statutory powers so that he can really safeguard the interests of the linguistic minorities.

One more point, and I will finish. With regard to the different safeguards which have been provided by the Constitution and which have been suggested by the States Reorganisation Commission, I would like to know from the hon. Minister how many of them are really being implemented in the different States. Yesterday I narrated the safeguards and the hon. Minister also pointed them out in his preliminary observations. I would like to know from the hon. Minister how many of them are being implemented in Bihar or in other States where the linguistic minorities are suffering.

If we can get such a statement, at least we will be in a position to see whether something is being done practically to implement all these safeguards. If the safeguards are not being implemented, we may be able to know what are the difficulties in the way. In the reports, in subsequent years, we would like to know all these details—how many schools are there in those areas, how many students are attending, how many are receiving aid and so on. All these details should be placed before us so that the linguistic minorities may be really satisfied that something is being done. Then this office of the Special Commissioner will create confidence in the minds of the linguistic minorities and there will be no trouble.

In the end, I would submit that the hon. Minister should see whether the Special Commissioner for Linguistic Minorities could not be invested with more statutory powers so that the linguistic minorities might feel assured that their interests will be safeguarded.

श्री मु० हि० रहमान (अमरोहा) : मोहतरिम डिप्टी स्पीकर साहब, इस वक्त हमारे सामने अकलीयती जुबानों के कमिश्नर की रिपोर्ट मौजूद है। जहां तक कमिश्नर साहब ने मेहनत फ़रमाई है और अकलीयती जुबानों के बारे में जो कुछ लिखा है, वह एक हद तक काबिले तारीफ़ है। लेकिन इसी के साथ-साथ मैं यह कहने पर मजबूर हूं कि यह रिपोर्ट अपने मकसद में नाकाम है, नाकाफ़ी है और गैर मुकम्मल है। क्यों? इसलिये कि गवर्नमेंट आफ़ इंडिया की पालिसी के मातहत स्टेट गवर्नमेंटें जुबान के मसले में, तालीम के बारे में, इब्तदाई तालीम, सानवी तालीम, युनिवर्सिटी तालीम के बारे में—बहुत कुछ जानती हैं, उन को मालूमात हैं, इसलिये वे खुद भी उस पर अमल कर सकती हैं। फिर क्यों इस बात की जरूरत पेश आई कि एक कमिश्नर अकलीयती जुबानों के लिये मुकर्रर किया जाय? इस का बैकग्राउंड और पसे-मन्जर यह है कि जिस वक्त स्टेट्स के री-आर्गेनाइजेशन के बारे में बहस थी और इस सिलसिले में एक कमीशन हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ़ हिस्सों में काम कर रहा था, उस वक्त अकलीयती जुबानों के नुमायंदों ने—उर्दू के हामियों और दूसरी अकलीयती जुबानों के हामियों ने—इस बात

की कोशिश की और यह मुतालिबा किया कि अमली तौर पर हमारी अकलीयती जुबानों को ज्यादा से ज्यादा तरक्की मिलने के लिये, और उस के सेफ़गार्डज हासिल होने के लिए एक कमिश्नर मुकर्रर किया जाय। इस बिना पर जुलाई, १९५७ में कमिश्नर का तकर्रुर हुआ और आज सितम्बर, १९५९ में हमारे सामने उसकी पहली रिपोर्ट पेश है।

इस रिपोर्ट में जो सवालनामा और उस के जवाबात दर्ज हैं, उन से यह अन्दाजा होता है कि बहुत सी स्टेट गवर्नमेंटों ने महज खानापुरी की है और कोई वाजेह तौर पर यह नहीं दिखाया कि उनके यहां जहां-जहां लिसानी अकलायतें हैं, उन के बारे में अमली तौर पर क्या काम किया जा रहा है, क्या इकदामात किये जा रहे हैं। यह चीज खास तौर पर नोट करने के काबिल है। मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि कमिश्नर साहब की रिपोर्ट सिर्फ़ जायजा लेने के लिये नहीं था। जायजे से आगे वह इस बात का भी साबित करते कि स्टेट गवर्नमेंटों में जहां जहां इस बारे में कमी थी, उस के मुतालिक कमिश्नर साहब ने क्या किया और उस के नतीजे के तौर पर स्टेट गवर्नमेंटों की जानिब से कोई इकदामात हुए या नहीं। इसी तरीके से दूसरे मामलात में भी खास तौर पर तवज्जह देने की जरूरत थी, ताकि यह बात वाजेह हो जाती कि कौन स्टेट्स गवर्नमेंट आफ़ इंडिया की पालिसी के मातहत अकलीयती जुबानों को सही हुकूक दे रही है और तमाम हुकूक अमली तौर पर अंजाम पा रहे हैं या नहीं। इस में कोई शक नहीं कि जहां तक बाज स्टेट्स के एलानात का ताल्लुक है, वे बहुत खुशनुमा मालूम होते हैं। लेकिन सवाल सिर्फ़ एलानात करने का नहीं है सवाल यह है कि उन एलानात के मुताबिक अमली तौर पर क्या होता है।

इस सिलसिले में मैं खास तौर पर कहूंगा कि उत्तर प्रदेश के मुतल्लिक, जहां उर्दू को ज्यादा से ज्यादा पनपने की गुंजायश होनी चाहिये थी, इस रिपोर्ट में बहुत ही मायूसकुन नतीजा दिखाया गया है और जो नक्शा हमारे सामने आया है, उसको हम जिस हद तक भी मायूसकुन करार दें, वह बजा और दुरुस्त है। वहां १९५३ में यह तय कर दिया गया कि यहां पर हर शख्स की जबान हिन्दी है। इस के नतीजे में उर्दू के हमदर्दों ने आम तौर पर और जो दूसरी अकलीयती जुबानों के मानने वाले थे, उन्होंने एहतजाज और प्रोटेस्ट किया और कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिये था, इस लिये कि जब हमारे विधान में, कांस्टीट्यूशन में, दस्तूर में दफा ३५० अलिफ में यह बात साफ़ है कि हर पढ़ने वाले को इब्तदाई तालीम अपनी मदर-टंग में अपनी मादरी जुबान में देनी चाहिये। तो किस तरीके से यह कहा जा सकता है कि यू० पी० में हर शख्स की मादरी जुबान और मदर-टंग हिन्दी है? इस बिना पर नतीजा यह निकला कि गवर्नमेंट की तरफ से एलान हुआ कि यह जरूरी नहीं है कि सरकारी तौर पर इस बारे में फैसला किया जाये, बल्कि इस का मदार और मेयार कुनबा और उन के गार्जियन्ज पर होगा—अगर कुनबा के गार्जियन्ज यह कहते हैं कि उन के बच्चों की मादरी जुबान उर्दू है, तो उन की जुबान उर्दू ही तस्लीम की जायगी और सरकारी एलान के मुताबिक हर एक की जुबान को हिन्दी नहीं करार दिया जायगा। यह बात जरूरी थी कि कमिश्नर साहब अपनी रिपोर्ट में यह बात साबित कर देते कि उत्तर प्रदेश में अब तक जो सूरते-हाल रही है, उसके मुताबिक जहां तक इब्तदाई दर्जे और प्राइमरी दर्जे का ताल्लुक है, उस में उर्दू ही मदर-टंग और मादरी जुबान को हैसियत से मीडियम आफ़ इन्स्ट्रक्शन—जरिया तालीम—रही है या नहीं। इस बारे में इस रिपोर्ट में कोई तफसील—कोई डीटेल्स—नहीं दी

[श्री मु० हि० रहमान]

गई है और इस से यह पता नहीं चलता कि १९५३ के एलान के बाद क्या कदम आगे बढ़ाया गया है —आया उर्दू को जरिया-तालीम करार दिया गया है या नहीं और अगर दिया गया है, तो कितने स्कूलों में, कितनी जगहों पर आज उर्दू मीडियम की हैसियत से इस्तेमाल होती है। यह कह देना ही काफ़ी नही है कि उर्दू पढ़ाई जाती है। सवाल यह है कि मादरी ज़ुबान की हैसियत से उस को ज़रिया-तालीम बनाया गया है या नही और अगर बनाया गया है, तो किन अज़ला में बनाया गया है। जिन अज़ला के बारे में चीफ़ मिनिस्टर, उत्तर प्रदेश ने एलानात किये थे क्या यह साबित हो सकेगा कि उन जगहो में आज बड़ी फ़राखदिली के साथ स्कूलो मे मादरी ज़ुबान की हैसियत से उर्दू पढ़ाई जाती है। जहां तक मैं समझता हूं, यह वाक्या नही है। अभी तक इस मामले में मायूसी ही मायूसी है। एलानात ज़रूर है खुशकुन और यह भी गनीमत है कि जिस रियासत की तरफ़ से ये एलानात नही होते थे और जहां उर्दू को कोई ज़ुबान तस्लीम नही किया जाता था, वहां उस को एक ज़ुबान तस्लीम कर के उस के लिये अज़ला मुकर्रर किये गये हैं। लेकिन इस वक्त वहां क्या कैफियत है, इसका कोई ज़िक्र कमिश्नर साहब ने नहीं किया है। उन्होने यह नही बताया कि वहां सानवी मदारस में—मिडिल स्कूलों में—सानवी तालीम के सिलसिले में उसके लिये क्या क्या सहूलियतें बहम पहुंचाई गई है। उन्होंनें यह भी नही बताया कि वहां पर उर्दू की निसाब की किताबें भी मौजूद है या नहीं, क्योंकि जब तक उर्दू की तालीम के लिये निसाब की किताबें ही मौजूद न हों, वह तालीम नहीं दी जा सकती है। इस रिपोर्ट में इस बारे में कोई तफ़सीलात नहीं दी गई हैं कि उत्तर प्रदेश में उर्दू की निसाब की—कोर्स की—किताबें भी मौजूद हैं या नहीं, हालांकि पिछले चार, पांच, छः बरस ऐसे गुज़र चुके हैं, जिन में उत्तर प्रदेश में उर्दू की निसाब की किताबें मौजूद नहीं थी, नहीं छपती थी, नहीं शाया होती थीं। सवाल यह है कि किस तरह बच्चे अपनी मादरी ज़बान में तालीम हासिल कर सकेंगे, अगर निसाब-तालीम—क्यूरि-कलम कोर्स—के मुताबिक किताबें शाया न होंगी, मौजूद नही होंगी। यह भी नहीं बताया गया है कि उस्तादों की तरबियत के लिये ट्रेनिंग का क्या इन्तज़ाम किया गया है, जिस से उर्दू की तालीम वे उस्ताद दे सकें। यह भी नहीं बताया गया है कि किन-किन इलाकों में गवर्नमेंट के रिकार्ड उर्दू में रखे जाते हैं। जहां तक मैं समझता हूं, इस मामले में तरक्की सिफ़र और ज़ीरो ही होगी —इसके आगे उत्तर प्रदेश के बारे मे नहीं कहा जायगा। दूसरे दर्जे में बिहार शामिल है। तीसरे दर्जे में दिल्ली भी शामिल है और फिर पंजाब का कुछ हिस्सा भी शामिल है। इन तमाम इलाको के बारे में ये तमाम तफसीलात हमारे सामने नही हैं। यह भी हमारे सामने नही है कि उत्तर प्रदेश में उर्दू में दरख्वास्तें कुबूल की जाती हैं या नहीं क्योकि इससे पहले हाई कोर्ट के एक जज का फ़ैसला हो चुका था कि चूंकि असेम्बली में यह तजवीज़ मन्ज़ूर हो चुकी है कि यहा की ज़ुबान सिर्फ़ हिन्दी है, इसलिये किसी को यह हक नही पहुंचता कि वह उर्दू में कोई दरख्वास्त दे। उसके बाद इस सिलसिले में तब्दीली हुई और कमिश्नर साहब इस लिये मुकर्रर किये गये हैं कि वह तब्दीली को देखें कि कोई खातिर-ख्वाह नतीजा हुआ है या नहीं। इसलिये हमें मालूम होना चाहिये कि जब से कमिश्नर साहब मुकर्रर हुये हैं और माहनारियों सैम्पीज़ियम को तेक़गार्ड किये गये हैं, क्यां वक्त से दरख्वास्तें उर्दू में कुबूल की जाती हैं या नहीं। यह भी नहीं बतलाया गया कि कितने एलानात हुकूमत के दिये है, जो उर्दू

इम्पार्टेंट एलानात हैं, जो कि उर्दू में छापा किये गये। मैं मैसूर स्टेट, आन्ध्र स्टेट और बम्बई को बधाई—मुबारकबाद दूंगा कि उन्होंने इस बारे में अच्छे इक्दामात किये हैं। काश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार, पंजाब, राजस्थान और मध्य प्रदेश भी कदम बढ़ाते और जिस जिस हैसियत से उर्दू का हक उन स्टेट्स में है, उस हैसियत से वहां उस को तरक्की होती। और जहां तक सहूलियतों का ताल्लुक है उन स्टेट्स के अन्दर उनको ज्यादा से ज्यादा सहूलियतें मिलती हैं या नहीं, ये तमाम बातें ऐसी हैं जिनका मैं समझता हूं कि रिपोर्ट में तफसील के साथ जिक्र नहीं है। इस बिना पर मैं यह जरूर कहूंगा कि अगर कमिश्नर साहब की तकरीरी इस गर्ज से हुई है कि वह इन सब चीजों को देखें तो अगर इस कोताही को कमिश्नर साहब पूरा नहीं कर सके तो हमारे होम मिनिस्टर और गवर्नमेंट आफ इंडिया की होम मिनिस्ट्री का फर्ज है कि वह ऐसे इक्दामात जो हैं उन सब का जिक्र करे और जब उस रिपोर्ट को यहां पेश किया जाये तो कम से कम जो पुकार यहां पर उर्दू, तेलेगू वगैरह दूसरी अकलियती जबानों के बारे में की जाती है, जो मुतालबात पेश किये जाते हैं, रिपोर्ट में उन तमाम प्रोटेस्ट्स, तमाम तकरीरों को साथ-साथ शामिल किया जाये ताकि सदर जमहूरिया और फरमायें और इसाफ करें और बतायें कि किस तरह से इन स्टेट्स में आइन्दा कमिश्नर साहब को अपना हक अदा करना है, ड्यूटी अदा करनी है, फर्ज अदा करना है और किस तरह से माइनारेटीज की जबानों को सेफगार्ड और उनके हकूक मिल सकते हैं। इन जुमलात के साथ मैं पुरजोर गुजारिश करूंगा कि मिनिस्टर साहब इस पर गौर करें, और सिर्फ इतना खुश करने के लिये रिपोर्ट हमें न दिखायें कि इस किस्म के ऐलानात हुये हैं, इस किस्म का तमकरा हुआ है। सवाल यह है कि जो इक्दामात उठाये गये हैं, वे इक्दामात क्या हैं, उनकी डिटेल्स क्या हैं, उनकी तफसीलात क्या हैं और अमली तौर पर प्रैक्टिकल तौर पर उनके मुताल्लिक स्टेट गवर्नमेंट्स ने क्या क्या किया है, खास तौर पर उत्तर प्रदेश ने, बिहार ने, दिल्ली ने और पंजाब ने।

[شری ایم - ایچ - رحمان (امروہا)

محترم ڈپٹی سپیکر صاحب - اس وقت ہمارے سامنے اقلیتی زبانوں کے کمشنر کی رپورٹ موجود ہے - جہاں تک کمشنر صاحب نے محنت فرمائی ہے اور اقلیتی زبانوں کے بارے میں جو کچھ لکھا ہے وہ ایک حد تک قابل تعریف ہے - لیکن اس کے ساتھ ساتھ میں یہ کہنے پر مجبور ہوں کہ یہ رپورٹ اپنے مقصد میں ناکام ہے - مایوس کن ہے اور غیر مکمل ہے - کیوں - اس لئے کہ گورنمنٹ آف انڈیا کی پالیسی کے ماتحت سکیمٹ گورنمنٹس زبان کے مسئلے میں - تعلیم کے بارے میں - ابتدائی تعلیم - ثانوی تعلیم - یونیورسٹی تعلیم کے بارے میں بہت کچھ جانتی ہیں - ان کو معلومات ہیں اس لئے وہ خود بھی اس پر عمل کر سکتی ہیں پھر کیوں اس بات کی ضرورت پیش آئی کہ یک کمشنر اقلیتی زبانوں کے لئے مقرر کیا جائے اس کا بیک گراونڈ اور پس منظر یہ ہے کہ جس وقت سکیمٹس کے ری آرگنائزیشن کے بارے میں بحث تھی اور اس سلسلہ میں ایک کمیشن ہندوستان کے مختلف حصوں میں گشت کر رہا تھا - اسوقت اقلیتی زبانوں کے

بات واضح ہو جاتی کہ کون سٹیٹس گورنمنٹ آف انڈیا کی پالیسی کے ماتحت اقلیتی زبانوں کو صحیح حقوق دے رہی ہیں اور وہ تمام حقوق عملی طور پر انجام پا رہے ہیں یا نہیں—اس میں دوئی شک نہیں کہ جہاں تک بعض سٹیٹس کے اعلانات کا تعلق ہے وہ بہت خوش کن معلوم ہوتے ہیں - لیکن سوال صرف اعلانات کرنے کا نہیں ہے - سوال یہ ہے کہ ان اعلانات کے مطابق عملی طور پر کیا ہوتا ہے -

اس سلسلے میں میں خاص طور پر کہونگا کہ اتر پردیش کے متعلق - جہاں اردو کو زیادہ سے زیادہ پہلے کی نگہداشت ہونی چاہئے تھی - اس رپورٹ میں بہت ہی مایوس کن نتیجہ دکھایا گیا ہے اور جو ثمرہ ہمارے سامنے آیا ہے اس کو ہم جس حد تک بھی مایوس کن قرار دیں - وہ بجا اور درست ہے - وہاں ۱۹۵۳ میں یہ طے کر دیا گیا کہ وہاں پر ہر شخص کی زبان ہندی ہے - اس کے نتیجہ میں اردو کے ہمدردوں نے خاص طور پر اور جو دوسری اقلیتی زبانوں کے ماننے والے تھے - انہوں نے احتجاج اور پروٹیسٹ کیا اور کہا کہ ایسا نہیں ہونا چاہئے تھا - اس لئے کہ جب ہمارے ودھان میں - کانسٹیٹیوشن میں - دستور میں دفعہ ۳۵۰ - الف میں یہ بات صاف

[شری ایم - ایچ - رحمان]

نمایندوں نے—اردو کے حامیوں اور دوسری اقلیتی زبانوں کے حامیوں نے—اس بات کی کوشش کی اور مطالبہ کیا کہ عملی طور پر ہماری اقلیتی زبانوں کو زیادہ سے زیادہ ترقی ملنے کیلئے اور اسکے سیف گارڈز حاصل ہونے کے لئے ایک کمشنر مقرر کیا جاوے - اس بنا پر جولائی ۱۹۵۷ میں کمشنر کا تقرر ہوا اور آج ستمبر ۱۹۵۹ میں ہمارے سامنے اسکی پہلی رپورٹ ہے -

اس رپورٹ میں جو سوال‌نامہ اور اس کے جوابات درج ہیں- ان سے یہ اندازہ ہوتا ہے کہ بہت سی سٹیٹ گورنمنٹوں نے محض خانہ پوری کی ہے اور کوئی واضح طور پر یہ نہیں دکھایا کہ انکے یہاں جہاں جہاں لسانی اقلیتیں ہیں ان کے بارے میں عملی طور پر کیا کام کیا جا رہا ہے - کیا اقدامات کئے جا رہے ہیں - یہ چیز خاص طور پر نوٹ کرنے کے قابل ہے - میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ کمشنر صاحب کی رپورٹ صرف جائزہ لینے کے لئے نہیں تھی - جائزے سے آگے وہ اس بات کو بھی ثابت کرتے کہ سٹیٹ گورنمنٹوں میں جہاں جہاں اس بارے میں کمی تھی‌اس کے متعلق کمشنر صاحب نے کیا کیا اور اس کے نتیجہ کے طور پر سٹیٹ گورنمنٹوں کی جانب سے کوئی اقدامات ہوئے ہیں یا نہیں - اس طریقہ سے دوسرے معاملات میں بھی خاص طور پر توجہ دینے کی ضرورت تھی تاکہ یہ

تعلیم قرار دیا گیا ہے یا نہیں اور اگر
دیا گیا ہے تو کتنے سکولوں میں -
کتنی جگہوں پر آج اردو میڈیم کو
حیثیت سے استعمال ہوتی ہے - یہ
کہہ دینا ہی کافی نہیں ہے کہ اردو
پڑھائی جاتی ہے - سوال یہ ہے کہ
مادری زبان کی حیثیت سے اس کو
ذریعہ تعلیم بنایا گیا ہے یا نہیں اور
اگر بنایا گیا ہے تو کن اضلاع میں
بنایا گیا ہے - جن اضلاع کے بارے
میں چیف منسٹر اتر پردیش نے
اعلانات کئے تھے - کیا یہ ثابت کیا
جا سکیگا کہ ان جگہوں میں آج
بڑی فراخدلی کے ساتھ سکولوں میں
مادری زبان کی حیثیت سے اردو
پڑھائی جاتی ہے - جہاں تک میں
سمجھتا ہوں یہ واقعہ نہیں ہے -
ابھی تک اس معاملے میں مایوسی
ہی مایوسی ہے - اعلانات ضرور ہیں
خوشکن اور یہ بھی غنیمت ہے کہ
جس ریاست کی طرف سے یہ اعلانات
نہیں ہوتے تھے اور جہاں اردو کو
کوئی زبان تسلیم نہیں کیا جاتا تھا
وہاں اس کو ایک زبان تسلیم کر کے
اس کے لئے اضلاع مقرر کئے گئے ہیں-
لیکن اس وقت وہاں کیا کیفیت ہے
اس کا کوئی ذکر کمشنر صاحب نے
نہیں کیا ہے - انہوں نے یہ نہیں
بتایا کہ وہاں ثانوی مدارس میں ،
مڈل اسکولوں میں - ثانوی تعلیم کے
سلسلہ میں اس کے لئے کیا کیا
سہولتیں بہم پہونچائی گئی ہیں -

ہے کہ ہر پہلے والے کو ابتدائی تعلیم
اپنی مدر ٹنگ میں - اپنی مادری
زبان میں دینی چاہئے - تو کس
طریقے سے یہ کہا جا سکتا ہے کہ
یو - پی - میں ہر شخص کی مادری
زبان اور مدر ٹنگ ہندی ہے - اس
بنا پر نتیجہ یہ نکلا کہ گورنمینٹ کی
طرف سے اعلان ہوا کہ یہ ضروری نہیں
ہے کہ سرکاری طور پر اس بارے میں
فیصلہ کیا جائے - بلکہ اس کا مدار
اور معیار طلبا اور ان کے گارجینز پر
ہوگا - اگر طلبا کے گارجینز کہتے ہیں
کہ اُن کے بچوں کی مادری زبان
اردو ہے تو ان کی زبان اردو ہی
تسلیم کی جائیگی اور سرکاری اعلان
کے مطابق ہر ایک کی زبان کو
ہندی نہیں قرار دیا جائے گا - یہ
بات ضروری نہیں کہ کمشنر صاحب
اپنی رپورٹ میں یہ بات ثابت کردیتے
کہ اتر پردیش میں اب تک جو
صورت حال رہی ہے اس کے مطابق
جہاں تک ابتدائی درجے اور پرائمری
درجے کا تعلق ہے اس میں اردو ہی
مدر ٹنگ اور مادری زبان کی
حیثیت سے میڈیم آف انسٹرکشن -
ذریعہ تعلیم - رہی ہے یا نہیں - اس
بارے میں اس رپورٹ میں کوئی
تفصیل - کوئی ڈیٹیل نہیں دی گئی
ہے اور اس سے یہ پتہ نہیں چلتا کہ
۱۹۵۳ کے اعلان کے بعد کیا قدم اُٹھے
بڑھتا کیا ہے - آیا اردو کو ذریعہ

[شری ایم - ایچ - رحمان]

شامل ہے - تیسرے درجے میں دہلی بھی ہے اور پھر پنجاب کا کچھ حصہ بھی شامل ہے - ان تمام علاقوں کے بارے میں یہ تمام تفصیلات ہمارے سامنے نہیں ہیں - یہ بھی ہمارے سامنے نہیں ہے کہ اتر پردیس میں اُردو میں درخواستیں قبول کی جاتی ہیں یا نہیں - کیونکہ اس سے پہلے ہائی کورٹ کے ایک جج کا فیصلہ ہو چکا تھا کہ چونکہ اسمبلی میں یہ تجویز منظور ہو چکی ہے کہ یہاں کی زبان صرف ہندی ہے اس لئے کسی کو یہ حق نہیں پہنچتا کہ وہ وہاں میں کوئی درخواست دیں - اس کے بعد اس سلسلے میں تبدیلی ہوئی اور کمشنر صاحب اس لئے مقرر کئے گئے ہیں کہ وہ اس تبدیلی کو دیکھیں کہ کوئی خاطر خواہ نتیجہ ہوا ہے یا نہیں - اس لئے ہمیں معلوم ہونا چاہئے کہ جب سے کمشنر صاحب مقرر ہوئے ہیں اور مائناریٹی لینگویجز کو سیفگارڈز دئے گئے ہیں- اس وقت سے درخواستیں اردو میں قبول کی جاتی ہیں یا نہیں - یہ بھی نہیں بتلایا گیا کہ کتنے اعلانات حکومت کے ایسے ہیں - جو بہت امپارٹینٹ اعلانات ہیں - جوکہ اردو میں شائع کئے گئے - میں میسور سٹیٹ - آندھرا سٹیٹ اور بمبئی سٹیٹ کو بدھائی - مبارکباد ہوتا کہ انہوں نے اس بارے میں انہوں نے یہ بھی نہیں بتایا کہ وہاں پر اردو کی نصاب کی کتابیں بھی موجود ہیں یا نہیں - کیونکہ جب تک اردو کی تعلیم کے لئے نصاب کی کتابیں ہی موجود نہ ہوں وہ تعلیم نہیں دی جا سکتی ہے - اس رپورٹ میں اس بارے میں کوئی تفصیلات نہیں دی گئی ہیں کہ اتر پردیش میں اردو کی نصاب کی - کورس کی کتابیں بھی موجود ہیں یا نہیں - حالانکہ پچھلے چار - پانچ - چھ برس ایسے گذر چکے ہیں جن میں اتر پردیش میں اردو کی نصاب کی کتابیں موجود نہیں تھیں - نہیں چھپتی تھیں - نہیں شائع ہوتی نہیں - سوال یہ ہے کہ کس طرح بچے اپنی مادری زبان میں تعلیم حاصل کر سکینگے اگر نصاب تعلیم - کیریکلم - کورس - کے مطابق کتابیں شائع نہ ہونگی موجود نہ ہونگی - یہ بھی نہیں بتایا گیا ہے کہ استادوں کی تربیت کے لئے ٹریننگ کا کیا انتظام کیا گیا ہے جس سے اردو کی تعلیم وہ استاد دے سکیں - یہ بھی نہیں بتایا گیا ہے کہ کن کن علاقوں میں گورنمینٹ کے رکارڈ اُردو میں رکھے جاتے ہیں - جہاں تک میں سمجھتا ہوں اس معاملے میں ترقی صفر اور زیرو ہی ہوگی—اس سے آگے اتر پردیس کے بارے میں نہیں کہا جائیگا - دوسرے درجے میں بہار

کی زبانوں کو سیفگارڈ اور ان کے حقوق مل سکتے ہیں - ان جملات کے ساتھ میں پرزور گزارش کروں گا کہ منسٹر صاحب اس پر غور کریں اور صرف اتنا خوش کرنے کے لئے رپورٹ ہمیں نہ دکھائیں کہ اس قسم کے اعلانات ہوئے ہیں اس قسم کا تذکرہ ہوا ہے - سوال یہ ہے کہ جو اقدامات اٹھائے گئے ہیں وہ اقدامات کیا ہیں - انکی ڈیٹیلس کیا ہیں ان کی تفصیلات کیا ہیں اور عملی طور پر پریکٹیکل طور پر ان کے متعلق سٹیٹ گورنمنٹس نے کیا کیا ہے خاص طور پر اتر پردیش نے بہار نے دلی نے اور پنجاب نے -]

اچھے اقدامات کئے ہیں - کاش - اتر پردیش - دلی - بہار - پنجاب - راجستھان اور مدھیہ پردیش بھی قدم بڑھاتے اور جس جس حیثیت سے اردو کا حق ان سٹیٹس میں ہے - اس حیثیت سے وہاں اس کو ترقی ہوتی - اور جہاں تک سہولیتوں کا تعلق ہے ان سٹیٹس کے اندر ان کو زیادہ سے زیادہ سہولیتیں ملتی ہیں یا نہیں - یہ تمام باتیں ایسی ہیں جن کا میں سمجھتا ہوں کہ رپورٹ میں تفصیل کے ساتھ ذکر نہیں ہے - اس بنا پر میں یہ ضرور کہوں گا کہ اگر کمشنر صاحب کی تقرری اس غرض سے ہوئی ہے کہ وہ ان سب چیزوں کو دیکھیں تو اگر اس کوتاہی کو کمشنر صاحب پورا نہیں کر سکے تو ہمارے ہوم منسٹر اور گورنمنٹ آف انڈیا کی ہوم منسٹری کا فرض ہے کہ وہ ایسے اقدامات جو ہیں ان سب کا ذکر کرے اور جب اس رپورٹ کو یہاں پیش کیا جائے تو کم سے کم جو پکار یہاں پر اردو - تیلگو وغیرہ دوسری اقلیتی زبانوں کے بارے میں کی جاتی ہے جو مطالبات پیش کئے جاتے ہیں رپورٹ میں ان تمام پروٹسٹس - تمام تقریروں کے ساتھ ساتھ شامل کیا جائے تاکہ صدر جمہوریہ غور فرمائیں اور انصاف کریں اور بتائیں کہ کس طرح سے ان سٹیٹس میں آنریبل کمشنر صاحب کو اپنا حق ادا کرنا ہے - ڈیوٹی ادا کرنی ہے فرض ادا کرنا ہے اور کس طرح سے مائنوریٹیس

श्री भक्त दर्शन (गढ़वाल) उपाध्यक्ष महोदय, भाषाई अल्पसंख्यकों के कमिश्नर महोदय ने अपनी जो पहली रिपोर्ट शासन के समक्ष प्रस्तुत की है, उसके लिये मैं उनको हार्दिक बधाई देना चाहता हू। राज्यों के पुनर्गठन के बाद पिछले दिनो संविधान की धारा ३५० मे जो संशोधन किया गया था उसके अन्तर्गत कमिश्नर की नियुक्ति हुई और पिछले एक वर्ष के अन्दर सारे देश की समस्याओं की ओर उन्होंने जो अपना ध्यान केन्द्रित किया, मैं समझता हू कि इसके लिये वे हम सब की बधाई के पात्र हैं।

यहा पर बहुत से माननीय मित्रों ने अभी तक जो आलोचनाये की है, उनसे यह सिद्ध होता है कि उन्हे इस बात्से इत्मीनान नही हुआ है कि कमिश्नर महोदय बहुत आगे नहीं बढ़े हैं और उनको और आगे बढना चाहिये था और जो अभी भी बहुत सी कठिनाइया हमारे अल्पसंख्यकों की रही है उनके निराकरण का उन्हे सपाय करना चाहिये था।

[श्री भक्त दर्शन]

अभी मेरे माननीय मित्र श्री मु० हि० रहमान जी बोल रहे थे और उन्होंने भी इस ओर इशारा किया । लेकिन मैं इस बारे में बड़ी नम्रता के साथ यह निवेदन करना चाहता हू कि यह कमिश्नर महोदय की सबसे प्रारम्भिक रिपोर्ट है, अभी उन्होंने एक प्रकार से स्थिति का अध्ययन किया है, उसका जायजा लिया है, और अगली रिपोर्ट मे, मुझे पूरी उम्मीद है, कि वे समस्याओं की गहराई से अध्ययन करके उल्लेख करेंगे और उन कठिनाइयों को दूर करने के लिये कुछ ठोस कदम उठायेंगे और तब स्थिति मे, हालत मे बहुत सा सुधार हो सकेगा ।

मैं कमिश्नर महोदय की रिपोर्ट के सम्बन्ध में सीधे कुछ बाते रखने से पहले अपने बुनियादी विचार सदन के समक्ष रखना चाहता हू । राज्यो के पुनर्गठन से जैसी कि आशका थी, भाषा सम्बन्धी विवाद सब जगह उठ खड़े हुये और यह एक प्रकार से अनिवार्य भी था । लेकिन मेरा अपना खयाल यह है कि अभी भी हमारे देश के कर्णधारो को यह सोचना चाहिय कि क्या कोई ऐसा कदम उठाया जा सकता है जिसके द्वारा इन अल्पसख्यकों की सख्या कम से कम कर दी जाय । वैसे तो अगर भाषा के आधार पर सब प्रान्त बन भी जाते है, उसके बाद भी मैं समझता हू कि दूसरी भाषाये बोलने वाले अल्पसख्यक लोग रह ही जायेंगे । हमारे देश में, यह बड़ सौभाग्य की बात है, कि दिल्ली, बम्बई कलकत्ता, मद्रास इत्यादि इतने बड़े बड़े शहर हैं, चाहे एक भाषा के प्रान्तो के अन्दर स्थित है फिर भी उनमे एक नहीं बल्कि हमारे देश के लगभग १८ या २० या २५ जितनी भी भाषायें है, उनको बोलने वाले भाई रहते हैं और इस प्रकार से वे एकता का स्वरूप हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं । लेकिन इस सम्बन्ध मे मैं निवेदन करना चाहता हू कि यद्यपि बहुत से हमारे लोगों के अन्दर इस बारे में मतभेद हो सकते है लेकिन मेरा खयाल यह है कि राज्य पुनर्गठन आयोग ने जो सिफारिशें की थीं, उनकी एक लाजिकल कारालरी यह होनी थी कि जो इस तरह के सीमा सम्बन्धी विवाद हैं जो कि भाषा पर आधारित है उनके बारे में सीमा आयोग की नियुक्ति की जाती और फिर बारीकी से उनका अध्ययन करके वास्तव में जिनको सहूलियातें जिन इलाकों में होती, जो जिस भाषा को बोलने वाले है, उनको उन प्रान्तो में जोड़ दिया जाता, तो देश का कोई नुकसान न होता । मद्रास और आन्ध्र की सरकारों ने पाटस्कर एवार्ड को स्वीकार करके जो आदर्श प्रस्तुत किया है उसे दूसरे प्रान्तों के अन्दर भी लागू किया जाना चाहिय, विशेषकर बम्बई और मैसूर के बीच जो बड़ा कटु विवाद चल रहा है, उसको निपटाने के लिये अगर वैसी व्यवस्था की जाय तो मुझे आशा है कि यह समस्या सुलझाई जा सकती है और कुछ ही दिनो मे जो कठिनाइया पैदा हो गई है, उनका बहुत कुछ हल किया जा सकता है ।

आज हमारे आदरणीय श्री हिफजुर रहमान साहब ने उर्दू के सम्बन्ध मे अपने कुछ विचार रखे । उन्होंने जिस सयत भाषा का, मुलायम भाषा का प्रयोग किया, उसके लिये मैं उन्हे बधाई देता हू । लेकिन कल जब श्री असार हरदानी साहब भाषण दे रहे थे, उनके जोशो-खरोश को देख करके मुझे कुछ आश्चर्य हुआ । उन्होने कल कहा कि पन्द्रह वर्ष से वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सदस्य हैं और उसके साथ-साथ उन्होने जिस प्रकार से अपनी बातों की वकालत की उससे मुझे न केवल आश्चर्य हुआ बल्कि दुख भी हुआ ।

आप जानते ही है, उपाध्यक्ष महोदय, कि कुछ वर्ष पहले अंजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू की ओर से राष्ट्रपति जी की सेवा में इस आशय का प्रतिवेदन दिया गया था कि उर्दू को तीन

चार प्रान्तों की दूसरी प्रादेशिक भाषा, आफिशयल रीजनल लैंगुएज घोषित कर दिया जाय । इस पर काफी विचार हुआ और उस विचार विमर्श के बाद गृह मत्रालय की ओर से १४ जुलाई, १९५८ को जो प्रेस नोट जारी किया गया उसमें कुछ इशारे किये गये, कुछ दिशाये बताई गई कि किस प्रकार से हम लोग उर्दू भाषा के बोलने वाले जो लोग हैं, उनकी कठिनाइयो को कम कर सकते हैं । उसमे एक सिद्धान्त अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया गया । हम उर्दू के प्रति आदर रखते हैं हम उर्दू को सस्कृत के समान ऊचा पद देना चाहते है । दाग, गालिब, इकबाल, अकबर इलाहाबादी जोश मलीहाबादी, बिस्मिल इलाहाबादी, ये पाच सात नाम ऐसे है जो कि हमारे साहित्य मे, भारत भर के साहित्य में अपना स्थान रखते हैं और चाहे उर्दू के बोलने वालेा और लिखने वालो की सख्या कुछ घटती चली जाय, जो कि स्वाभाविक भी है, बदली हुई परिस्थितियो मे, फिर भी इन्हे बडे साहित्य कारो के प्रति जो सम्मान है, वह कभी कम नही होगा । लेकिन हम अपने देश के राज-काज मे और व्यवहार में किस तरीके से उर्दू का प्रयोग करे, यह प्रश्न हमारे सामने है । पिछले दिनो जो प्रतिवेदन दिया गया था कि उर्दू को दिल्ली में उत्तर प्रदेश मे, बिहार मे और पजाब मे दूसरी राजभाषा घोषित किया जाय, उस पर केन्द्र की सरकार ने अपना अन्तिम निर्णय दे दिया ।

स्टेट्स रिआर्गेनाइजेशन कमिशन ने यह निश्चित रूप से कह दिय था कि जिस किसी प्रान्त में कम से कम ३० प्रतिशत या उससे अधिक किसी भाषा के बोलने वाले लोग हो तब उस भाषा को सरकार मान्यता दे अन्यथा नही । उत्तर प्रदेश में सन् १९५१ की जन-गणना के हिसाब से ७९ ८ लोगो ने अपने आपको हिन्दी भाषी लिखाया, हिन्दी भाषा बोलने वाला लिखाया, १०.७ ने अपनी भाषा हिन्दुस्तानी बताई, और ६ ८ ने उर्दू बताई । इनके अलावा जो २ ७ रहे उन्होने जैसे कि गढ़वाल जिले के रहने वाले कुछ लोगो ने अपनी भाषा गढवाली, कुछ ने कुमायूनी, और कुछ ने नेपाली लिखाई—ये भाषायें भी हिन्दी की उपभाषाये है, इसलिये उन्हें हमें हिन्दी के अन्दर ही जोडना पडेगा । इस कसौटी पर भी उर्दू का जहा तक सम्बन्ध है, उत्तर प्रदेश में वह दूसरी भाषा का स्वरूप नही ले सकती है, दूसरी भाषा नही बन सकती है । हा, उसे जो सहूलियते मिलनी चाहियें, वे जरूर मिले ।

पिछले दिनो अजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू ने जो प्रतिवेदन दिया था और होम मिनिस्ट्री की ओर से जो प्रेस नोट निकाला गया, उसके बारे मे इस रिपोर्ट मे कहा गया है —

"The Press Note was welcomed by the Anjuman-e-Taraqqi-e-Urdu as having substantially met their demands"

मोटे तौर से उनकी माग स्वीकार कर ली गई है और अब उनकी जो कठिनाइया हैं, उनके ऊपर ध्यान दिया जा रहा है । मौलाना हि० रहमान साहब यहा मौजूद है, उनको याद होगा कि जब पार्लियामेंटरी कमेटी जो कि आफिशल लैंगुएज के बारे मे बनाई गई थी, उसमे यह सवाल उठाया गया उस वक्त उन्होने खुद कहा था कि अगर प्रेस नोट पर पूरे तौर मे अमल किया जाये और उसको राज भाषा समिति की रिपोर्ट मे सम्मलित कर दिया जाये ता उनको सतोष हो जायेगा । लेकिन उसके बावजूद भी अन्सार हरवानी साहब ने अपने भाषण मे यह कहा कि उर्दू को दूसरी भाषा के रूप मे घोषित किया जाना चाहिये । मैं समझता हू कि यह उन्होने बेमौका राग अलापा है और अगर वह शान्ति के साथ और सजीदगी के साथ इस पर पुन विचार करे तो मुझे आशा है कि वे खुद अपने विचार पर दृढ़ नही रहेंगे ।

श्री मु० हि० रहमान : मैं गुजारिश करना चाहता हू कि जहा तक अंजुमन-ए-

[श्री मु० हि० रहमान]

तरक्की-ए-उर्दू का ताल्लुक है, उसका मुतालिबा वाकई में अब भी यह है कि उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी सरकारी जबान कबूल किया जाये ।

[شری ایم - ایچ - رحمان—میں گزارش کرنا چاهتا هوں که جہاں تک انجمن ترقی اردو کا تعلق هے اسکا مطالبه واقعی میں اب بهی یه هے که اترپردیش میں اردو کو دوسری سرکاری زبان قبول کیا جائے -

श्रीमती सहोदरा बाई राय (सागर—रक्षित—अनुसूचित जातियां) लेकिन मुश्किल यह है कि उत्तर प्रदेश मे जितनी हिन्दी बोली जाती है उतनी उर्दू नही बोली जाती ।

श्री भक्त दर्शन : मै निवेदन करना चाहता हूं कि अंजुमन-ए-तरक्की-ए-उर्दू की स्थापना ही इसलिये हुई है कि वह उर्दू को दूसरी राजभाषा घोषित करवाये ।

लेकिन जहा तक हमारे मौलाना साहब के रुख का सवाल था, मैंने जहां तक उसको समझा, संसदीय समिति में भी उन्होंने इस बात को कबूल किया कि होम मिनिस्ट्री ने जो सर्कुलर निकाला है, अगर उस पर पूरी तरह से अमल हो तो फिलहाल कम से कम इत्मीनान हो जाता है और उस सिलसिले में आगे बढ़ा जा सकता है । मतलब यह है कि वह अपनी बुनियादी मांग पर ज्यादा दृढ़ नही हैं । इस सम्बन्ध में मैं इतना ही कहना चाहता हूं ।

अब इसमे जो पाच बाते बतालाई गई है और उसके साथ उत्तर प्रदेश की सरकार ने जो जवाब दिया है कि हम पहले सेउस पर अमल कर रहे है— एक जगह पर उन्होंने इस रिपोर्ट मे यह स्थिति बतलाई है—उसकी ओर मै मौलाना साहब और दूसरे साथियो का ध्यान आकर्षित करना चाहता हू उन्होंने लिखा है :

"Orders of the Government have not been followed in the spirit by some people in their enthusiasm for what they considered to be the cause of Hindi."

यानी कही-कही पर अधिकारियो ने राज्य सरकार के आदेशो का पालन पूरी तरह से नही किया । लेकिन वह आगे लिखते हैं

"It is also probably true, on the other hand, that certain protagonists of Urdu have at times made mountains out of mole-hills and come forward with complaints for which there is no genuine basis."

अर्थात् तिल का ताड़ बनाने के लिये भी कभी कभी उर्दू वालों की तरफ से शिकायत की गई है । एक बात का बतगड किया गया, यह इसका दूसरा पहलू है । जहा कुछ सरकारी कर्मचारियो ने सरकारी आदेशों का पूरी तरह से पालन नही किया वहा जो उर्दू के पक्ष वाले थे उन्होने भी बात का बतगड करने की कोशिश की । यानी दोनो तरफ से यह बात थी ।

इस सम्बन्ध मे मै यह निवेदन करना चाहता हू कि इस बारे मे हिन्दी वालो की तरफ से शिकायत यह है कि अभी तक भी यद्यपि सन् १९५१ मे हिन्दी को उत्तर प्रदेश की राजभाषा घोषित किया गया था लेकिन अभी तक भी उस पर कोई अमल उत्तर प्रदेश मे नही हो पाया है । मै आपको बतलाऊं कि अभी यहां पर अदालती भाषा का जिक्र किया गया । मेरे पास एक अखबार है बदायू का "बेलना" नाम का, जिस में वहा के जिला जज साहब ने एक इश्तहार प्रकाशित

किया है यह हिन्दी में प्रकाशित हुआ है लेकिन इसकी भाषा जरा देखिये

"ब अदालत श्री आर० एस० भार्गवा,
जिला जज, बदायूं

मुतफरका न० ४० सन् ५६
हर खास व आम

इश्तहार मजरिया अदालत जजी बदायूं
मुकाम बदायूं

दरख्वास्त मुसम्मा शान्तीदेवी व गोमती देवी ने वास्ते हसूल सर्टीफिकेट वसूल जर कर्जा व किफालत हाय याफ्तनी मुसम्मा बलेश्वरदयाल मुतवफ्फा शौहर"

फिर कहते है तारीख मुकर्ररह हाजिर हो कर उज्र अपना पेश करे। दर-सूरत इनकजाय तारीख मजकूर के फिर उज्र किसी का न सुना जायगा और हुक्म मुनासिब निस्बत दरख्वास्त मजकूर के सादिर होगा।"

इसमे कौनसा शब्द हिन्दी का है बतलाइये ? मै समझता हू कि यह उर्दू बाज वक्त ऐसी मकील हो जाती है कि शायद उर्दू वाले भी उसको पूरी तरह से समझ न कर सके। मै उस जिले गढवाल का रहने वाला हू जहा ब्रिटिश सरकार के जमाने मे भी हिन्दी मे अदालत का कार्य होता था और देवनागरी लिपि मे होता था। लेकिन वहा आज भी जो समन जाते है, जिन्हे हम हिन्दी मे अद्धानपत्र कहते है और जिनके द्वारा वादी और प्रतिवादी को बुलाया जाता है, उनका शीर्षक होता है

"समन व गरज इन्फिसाल मुकदमा"

यानी मुकदमा का फैसला करने के लिये समन दिया जा रहा है। मेरा निवेदन यह है कि उत्तर प्रदेश में इस समय जो परिवर्तन हुआ है उस को हमें भाषा का परिवर्तन नही बल्कि लिपि का परिवर्तन कह सकते है। लिपि जरूर देवनागरी अपना ली गई है। जो कुछ भी वहा प्रकाशित हो रहा है वह जरूर देवनागरी लिपि मे हो रहा है, और उसमे ऐतराज की गुजाइश नही है, लेकिन अदालतो की भाषा बुनियादी तौर से फारसी और उर्दू मिश्रित चल रही है, जिसके प्रति आज विद्रोह है। इसलिये मै उर्दू वालो से निवेदन करना चाहता हू कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने कमिश्नर महोदय की प्रश्नावलि का जो उत्तर दिया है उसमे बतलाया गया है कि हम सच्चाई के साथ जो केन्द्रीय सरकार की विज्ञप्ति है उस पर चलने का प्रयत्न कर रहे है। कुछ चीजो मे हमने कमिया महसूस की है, उन की ओर हमने सरकारी अधिकारियो का ध्यान आकर्षित किया है। तो मेरा खयाल है कि जब दूसरी रिपोर्ट आयेगी तो सब सदस्यों को यकीन हो जायेगा कि उत्तर प्रदेश सरकार हिन्दी को प्रधानता देते हुये भी उर्दू को किसी तरह कोई धक्का नही पहुचाना चाहती और उस पर पूरी तरह से अमल करना चाहती है।

मै यहा पर इस विषय को समाप्त करने से पहले श्री अन्सार हरवानी की इस बात की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हू जब कि उन्होने हिन्दी की कठिनता की ओर ध्यान आकर्षित किया और जो हिन्दी का अखिल भारतीय स्वरूप है उस पर भी आक्षेप करने का दु:साहस किया। उन्होने एक तरह से मजाक उडाते हुए कहा कि किस तरह से हिन्दी भाषा को क्लिष्ट बनाया जा रहा है। उन्होने "ससद्" और "सचिवालय" इस तरह के शब्दो का उल्लेख किया और बतलाया कि दिल्ली की आम जनता उनसे पूरी तौर से परिचित नही है और जब यह नाम लिये जाते है तो व उनको समझ नही पाते है। मै निवेदन करना चाहता हू कि आज हिन्दी एक मोड पर खडी है और उस को दो तरफ से खीचा जा रहा है। बहुत से लोग, जिन मे से एक मै भी हूं, हिन्दी को सरल बनाने के पक्ष में हूं, लेकिन मै इस तरह से उसे सरल करने के

[श्री भक्त दर्शन]

पक्ष में नही हू जैसे कि पिछले वर्षों में डा० रघुवीर की हिन्दी के विरोधियों ने एक नई 'हिन्दी का निर्माण करने की कोशिश की, जिस में (कैबिनट) मन्त्रिमडल का अनुवाद किया गया "विचविन्दी खोली"। ऐसे अजीब और अटपटे शब्द बनाने की कोशिश की गई, सरलता के नाम पर ऐसी गडन्त करने की कोशिश की गई जो कि हास्यास्पद थी । हम इतनी दूरी तक नही जाना चाहते ।

लेकिन सवाल यह है कि जो हमारे सविधान में आदेश मिला है कि हम हिन्दी को सारे देश की भाषा बनाना चाहते है और उसे सब भाषाओ के समीप लाना चाहते हैं, उस के सदर्भ मे क्या किया जाय ? उसको ध्यान से देखिये कि हम कैसे ला सकते है । भारत की जितनी भाषाये हैं अधिकाशत वे संस्कृत की पुत्रिया है और जितनी दक्षिण की भाषायें हैं उन मे सस्कृत शब्दो का काफी प्रतिशत या पर सेन्टेज है, उन की बहुलता है, केवल तामिल को छोड कर, हाला कि तामिल पर भी सस्कृत का प्रभाव पडा है, इस मे सन्देह नही । इस दृष्टिकोण से अगर हम हिन्दी को अखिल भारतीय स्वरूप देना चाहते है तो इस के सिवा कोई चारा नही है कि हम सस्कृत शब्दो को उस में ले, कठिन शब्दो को छोड कर , ताकि जो अन्य भाषाओ के लोग हैं, प्रादेशिक भाषाओ के लोग है, वे उस को अच्छी तरह समझ सकें ।

अभी राजभाषा समिति का प्रतिवेदन हमारे सामने था, और आज राज्य सभा मे उस पर विचार हो रहा है। कल श्री पणिक्कर साहब ने, जो कि हमारे देश में दक्षिणी भाषाओ और अग्रेजी के एक महानतम विद्वान समझे जाते हैं स्वयम् वहा पर भाषण देते हुए इस बात को बतलाया कि अगर हमे हिन्दी को अखिल भारतीय-स्वरूप देना है तो उसकी आधारशिला हमें सस्कृत पर रखनी होगी इस के सिवा कोई चारा नहीं है अगर हम उसे अखिल भारतीय स्वरूप देना चाहते हैं और दूसरी भाषाओ के नजदीक लाना चाहते हैं ताकि सब लोग उसे समझ सकें । इस का और कोई उपाय नही रह जाता है । इसलिये अगर कही पर थोडी बहुत क्लिष्टता आती है तो इस के लिये तैयार रहना चाहिये क्योकि आप सोचिये कि भाषा क्या है । भाषा भावो की अभिव्यजना शक्ति है, उन का मीडियम आफ एक्स्प्रेशन है ।

श्री यादव (बाराबकी) इस को भी समझा दीजिये ।

श्री भक्त दर्शन : मैं ने कहा मीडियम आफ एक्सप्रेशन । उसको प्रकट करने का एक तरीका है । भाव अगर सरल होगा तो भाषा अपने आप सरल होगी । अगर भाव कठिन होगा गम्भीर होगा तो भाषा अपने आप कठिन होगी। साइस के विचारो को हम सरल भाषा में कभी प्रकट नही कर सकते, हम फिलौसफी, दर्शन-शास्त्र के विचारो को सरल भाषा मे नही प्रकट कर सकेगे । मगर बोल चाल की भाषा राजकाज की भाषा जितनी सरल हो सक, उतनी हो। इस मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिये ।

उपाध्यक्ष महोदय, मै आपका अधिक समय नही लेना चाहता । मै कमिश्नर महोदय को उन के इस कार्य के लिये हृदय से धन्यवाद देता हुआ, बधाई देता हुआ, यह निवेदन करना चाहता हू कि हिन्दी के विकास के हिन्दी के राज-भाषा होने के प्रश्न को हमे इस दृष्टिकोण से नही लेना चाहिये कि उस का बुरा असर उर्दू पर या दूसरी भाषाओ पर पडेगा, बल्कि इस प्रकार सोचना चाहिये कि सभी भाषाओ के विकास के साथ हिन्दी की उन्नति होगी ।

इन शब्दो के साथ में अपना वक्तव्य समाप्त करता हू ।

Shri Goray (Poona): Mr. Deputy-Speaker, Sir, this House is called upon

to take note of the report of the Commissioner for Linguistic Minorities. This report assumes a special significance because this is the first time that the Commissioner has submitted his report to the House. It assumes a special significance also because the Commissioner has been functioning as the special officer appointed by the President under article 350B of our Constitution. This article was introduced by an amendment of the Constitution because the States Reorganisation Commission had recommended that such an officer would be necessary to safeguard and look after the interests of the linguistic minorities even after the reorganisation of States

So far as this report is concerned, it is very difficult to congratulate the Commissioner because this report is a sort of patchwork. It is sketchy and all that he has done is to put together the various circulars that he had forwarded to the State Governments and their replies. In a way, we ought to sympathise with the Commissioner also because the work that has been entrusted to him is very difficult After the reorganisation of the States, many sore spots have been left over the body politic of India. Had his work been confined only to cultural or linguistic activities I suppose he might have succeeded better. In many places you will find that these linguistic problems have assumed a political aspect, and as soon as a particular problem takes on a political complexion, I think it becomes very difficult, and perhaps uncharitable also, to expect that the Commissioner, armed as he is with such meagre powers, could do anything

The Commissioner has written to the various Governments and has collected their answers for our perusal. Some of the States have not even cared to answer in detail. It is very surprising that in this report we do not find his criticisms or his observations or his recommendations as to how the future work should be done or planned and how those States which proved to be recalcitrant should be brought to book.

You will find that this problem is not confined to one State at all. Bihar, Uttar Pradesh, West Bengal, Orissa, Mysore, Bombay—almost in every major State you will find this problem existing. I would like to submit that this problem is likely to grow. It will grow because, in the first instance, this reorganisation has not been done on a proper, scientific basis. I would not like to dwell upon the points which my hon. colleagues have already dealt with, but I would only say that if the principles that have been put forward by Shri Pataskar were to be followed throughout India, this problem would at once shrink in its size The States Reorganisation Commission had to say that even after the reorganisation large belts of territory which were bilingual would remain I do not know why such large belts should be allowed to exist. Of course, I am quite sure that even if we take all the care in the world we cannot draw a line by which we can say that those who belong to a particular language will be segregated from others who belong to another language That is not possible. But what I am pleading is that if sufficient care had been taken and certain basic principles had been enunciated and followed, then this problem would have become smaller. It would have then been possible for the Commissioner to handle the problem as a linguistic problem and not as a political problem

Take, for instance, the problem as it exists today in Mysore. There is a big enclave of Marathi-speaking people in Mysore and those people are saying that they are not being treated fairly or with justice. The Mysore State says that it is doing everything for them. But the Mysore State which is saying this in respect of the Marathi-speaking people will be complaining about the Kerala Government so far as Kasaragod is

[Shri Goray]

concerned. This is what is happening. If they had taken the village as a unit, then I think it would have been possible to draw more rational boundaries or a more rational scheme of boundaries and it would have been possible to make this problem a really linguistic problem, a problem of linguistic minorities. That has not been done.

I would like to point out another thing. This problem is likely to crop up in the bigger industrial towns that are coming into being. Take, for instance, the steel cities of Rourkela and Bhilai and Jamshedpur and other big cities that are likely to come. It will never happen that only the people speaking the particular language of the State in which a particular industry happens to be developed will be employed in such cities. From all corners of India people will be coming there. People speaking Punjabi, Assamese, Marathi, Telugu, etc. will be coming there and for the welfare of these people and their children, to safeguard their services, we shall have to take certain steps. It is not enough that that particular language is mentioned in the eighth schedule. Just now my friend from U.P. was saying that Urdu is not getting proper encouragement and the proper place it deserves. Now Urdu happens to be one of the languages mentioned in the eighth schedule, as also Marathi and Oriya. But in spite of the fact that all these languages are mentioned in the eighth schedule, you find they are asking for protection and the language which has no place in the eighth schedule—English for instance—does not ask for protection. In spite of the fact that we are trying to eliminate English and give more and more prominence to Hindi,

Shri C. K. Bhattacharya (West Dinajpur): The less you ask for it, the more you get it.

Shri Goray: I am drawing attention to this paradox that in spite of the fact that all these languages are mentioned in the eighth schedule—we say these are all national languages—these national languages have to ask for protection, when they happen to be spoken in some other State.

So, my submission is either you will have to scrap this office of the Commissioner or you will have to give him more powers. Otherwise you will find that this high officer will only be submitting his report and nothing will be done about it. Yesterday, while initiating the debate, the hon. Minister was always confusing the Commissioner for Linguistic Minorities with the Commissioner for Backward Classes and Scheduled Tribes. I thought that there was some significance in it, because both the Commissioners are suffering the same fate. Nobody listens to their recommendations. They go about making certain recommendations. We take note of it, discuss their reports and there the matter ends. If this Commissioner's report is really to be worth anything, I think next time when he reports, he should be able to report with more powers.

It is my feeling that it is not the Commissioner who deserves the censure, but it is the Home Ministry which deserves it, because after all, he is their limb and I do not think the Home Ministry is putting its heart into what it is doing in this respect. The zonal council is there. What is it doing? It is just one more instrument which is allowed to remain idle. We had expected so many things out of this. But it hardly meets and if it meets, it discusses only those problems which are very easy to solve. All the difficult problems are shelved. So, whether it is the zonal council or the Commissioner for Linguistic Minorities, unless we invest them with more powers, it will not be possible to implement their recommendations and it will not be possible to create that sense of confidence

among the linguistic minorities in the various States that they will get justice.

Take the case of Urdu, for instance. I do not think they are asking for the moon. But even their demands, which are very logical and modest are not met. I do not know exactly what is happening in U.P., but in other States, they have their grievances. These grievances must be looked into. The Commissioner must be authorised to go into them deeper and to come to certain conclusions, which should be implemented, which the State Governments should be made to implement. Otherwise, he only writes, receives a reply and nothing else happens.

So, I would say that this special officer appointed by the President must be treated with more respect and invested with more powers. When we amended the Constitution and provided that the President will appoint a special officer, there must have been some meaning in it. It was not just a sop. When the States Reorganisation Commission considered this whole question, there were two or three alternatives. One was to have a special Ministry. The other was to invest the Governors with more power. Just as in the NEFA area, the Governor is looking after the welfare of the tribals on behalf of the President, it was suggested similar powers should be given to the Governors. But these two recommendations were not to the liking of the States Reorganisation Commission. But they understood the gravity of the situation. That was why we introduced article 350B in the Constitution and we empowered the President to appoint a special officer. But what happens to the recommendations of this special officer, who functions almost as a sort of representative of the President?

Before concluding, I must say, either you scrap this office or give more powers to him. Yesterday the Minister said the Commissioner is a very big officer and he deserves our congratulations because he is taking so much trouble for us, etc. But it is no use congratulating him if his recommendations and his office do not get the respect that they deserve. So, I would ask the Minister to look into it deeper This question will be with us for a long time to came, because it is essentially a question of emotional integration and this emotional integration will not be achieved within 5 or 10 years. It will take a longer time. Therefore, if this question is going to remain with us for a long time and likely to prove explosive if it is not attended to immediately, I would request him to go deeper into it. Let the Commissioner be given more powers and whatever his recommendations are, let us devise a machinery by which we can put them into effect.

Shri C. K. Bhattacharya: Mr. Deputy-Speaker, Sir, in the beginning, I should say that I am not happy over this particular expression 'linguistic minorities'. The problem in India has been the problem of minorities, at times with disastrous results in politics as well as in society. So, we ought to be careful that we do not go on increasing minorities. If we proceed in that way, one day we shall come to a stage when India will become a land of minorities and the wood will be lost for the trees.

Already we have got religious minorities, communal minorities, caste minorities, tribal minorities, etc. and the S.R.C. has created this linguistic minority. If we go on adding to the minorities, we are bound to find ourselves in trouble some day.

Shri N. R. Muniswamy (Vellore): Different nomenclatures are given to different categories

Shri C. K. Bhattacharya: Yes. But the word 'minority' has a significance in Indian history, which ought not to be forgotten and also the result which it has in politics as well as in society.

[Shri C. K. Bhattacharya].

That is my point. The question will be put to me as to what the expression should be. I find in the S.R.C. report, that particular chapter begins with the heading "Safeguards for linguistic groups". I thought that was a good expression. They began with that, but subsequently changed it. When the Home Ministry drafted its resolution on that particular chapter, they used the expression "minor language groups". I believe that was a proper expression and that should have been used in this report as well as in the Constitution. But somehow it was overlooked. In article 350A, it has become "linguistic minority groups". The Government of India memorandum puts the expression as "minor language groups". But, somehow, when that particular article was drafted for the Constitution this expression was not put in and this was changed into "linguistic minority groups". And what do we find in this report? The Commissioner has advanced further. He has used the expression "linguistic minorities". So, evolution is proceeding towards the creation of a new minority in the Indian body politic. That is my apprehension. More than that, on page 46, I am very apprehensive to find that he had used the words "minority communities". The less that word is used in this context, the better. Why should the expression "minority community" come in the matter of discussion over the protection of languages? If that expression is used, just ponder over the number of minority communities that will be in India. Bengalis will be a minority in Bihar, Assam and U.P. Biharis will be a minority community in other places. A Marathi will be a minority community in all the different States. If the expression "minority community" is allowed to be used in this context, there will be no end to the number of minorities which we shall be having in India. So, I would suggest to the Home Ministry, as well as to the Commissioner, that this expression should be discarded and, if possible, in drafting future reports the expression that was used in the Memorandum of the Home Ministry—"minor language groups"—should be stuck to, and the report should be the report of "the Commissioner for minor language groups" and not "the Commissioner for linguistic minorities". That is my first submission. Of course, I do not deny the problem of language. The problem of language is there.

The next point that I should like to stress upon is that the question of language should not be mixed up with the question of culture, as has been done in this Report. I find from the particular chapter of the S.R.C. report that the S.R.C. does not raise the question of culture; it discusses only the question of protection for languages and the word "culture" is used only in two places in that chapter. That is not there in the Constitution also. But this Linguistic Minority Report has mixed up the question of culture with the question of protection of languages. That should also be avoided.

I would maintain that at least in India difference in language does not lead to difference in culture. Here we are meeting and we are coming from so many States. I will say that though we may be differing in languages we do not necessarily differ in culture. My friends from Kerala come from one extreme point in India. Though we may be differing in many other things....

Shri Narayanankutty Menon (Mukandapuram): Nothing. We are in agreement with everything.

Shri C. K. Bhattacharya: I hinted only at the political difference but I did not wish to bring it out.

We do not differ in culture. The culture that prevails in Kanyakumari is the same as the culture that prevails in Dakshineshwar on the bank of the Ganges. We have inherited

the Indian culture that extends from Kamrup to Kanyakumari and Kashmir. So, the question of culture should not be mixed up with the question of difference in languages. India is one unit, administratively and culturally and it should be looked upon as such. Gandhiji was accepted in the world as the embodiment of Indian culture. Whose culture did he represent—mine or Shri Goray's or yours or Shri Datar's? He must have been the representative of the entire Indian culture and that culture is one Rabindranath Tagore went to different countries times without number, as the cultural ambassador of India. What culture did he represent? Not the culture of Bengal or Andhra or Gujerat or Kerala, but the culture of India as a whole. Shri Nehru is the representative of Indian culture. Whose culture does he represent—U.P., Madras or Andhra? Then again, our Vice-President, Dr. Radhakrishnan, goes out to the world, and is accepted as a messenger of Indian culture. What culture does he represent? Certainly, not the culture of Telengana or Andhra or Tamil. It is one embodiment of Indian culture which is represented by all these personalities whom I have named here. That point should be borne in mind. So, my humble and importunate submission is, not to mix up the question of culture with the question of language. Language is a definite thing and definite steps may be taken for its protection. Culture is a matter of refinement and that would lead us to a stage where the question of definition or the question of description might differ and different opinions might arise. Here I might also mention the name of Maulana Azad. Maulana Azad was regarded as a man of the highest refinement and culture. We in Bengal claim, as much as I believe the people in U.P. or Punjab that he....(*Interruptions*). He belonged to Bengal. In fact, he used to say that he was a Bengali.

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): He was an Indian.

Shri C. K. Bhattacharya: That is the point which I want to bring out. These great personalities of India represent one culture, and that is the Indian culture. Call it a composite culture, if you like, as is done in Article 351 of our Constitution—but there is one composite culture.

So, the Home Ministry should bring home to the Commissioner for "minor language groups" that he should not go into the question of culture. He should confine himself only to the question of how the linguistic groups can have protection in different States and how they could have their own mother tongue used in different spheres of their lives. That is my second point.

In this connection, I might mention another point which is a sore point with me. At times I find our land described as a sub-continent. I do not feel any pleasure in thinking that I am the inhabitant of a sub-continent. I am the inhabitant of a country, **India is a country**. That expression was used, was invented, by designing persons who wanted to break up India. So, the use of what expression should be abandoned altogether. India is one country. We are the inhabitants of that country. There is no pleasure in thinking that I am the inhabitant of a sub-continent. May be, it is described so when compared with Europe. Whatever that may be, my country is my country and not a sub-continent.

Then I come to the third point, and that is: where are the needs for protection of the languages in different States? There are three stages where protection is needed. One is in the medium of instruction. In the field of education the minor language groups require protection. Secondly, in the field of official language these minor language groups require protection. The third one is in the matter of examination for public services. There also the minor language groups in different States require protection. If protection is afforded

[Shri C K. Bhattacharya]

in these three fields, in the field of education, in the field of official language and in the field of examination for public services, I believe the grievances which are being voiced in this House will be met and solutions would be found out much earlier than Shri Goray expects them to have Speaking for myself, in the Eastern zone (as the Report has stated) there are large tracts of Bengali-speaking areas in Bihar and in Assam We wanted to have them incorporated in Bengal, which has not been done

15 hrs

Shri D C Sharma: Now you have come to the real point

Shri C. K. Bhattacharya: We feel that they require protection (*Interruption*) I have begun with the proposition that the languages require protection. I stick to that to the end of the debate and to the end of my speech. I shall end by that Just as Shri Panigrahi was stating about certain languages In any case if protection is to be afforded which is the way and which is the agency which would do it? The Commissioner, I find, has asked the State Governments to keep a watch on their officers. But the question is: who will keep a watch on the State Governments themselves?

This thing occurred to the States' Re-organisation Commission as well and even in the Government of India memorandum I have not overlooked it In concluding the memorandum the Home Ministry has quoted a very relevant passage from the States' Reorganisation Commission's Report The passage is this

> "We wish to emphasise that no guarantees can secure a minority against every kind of discriminatory policy of a State Government. Governmental activity at State level affects virtually every sphere of a person's life and a democratic government must reflect the moral and political standards of the people. Therefore, if the dominant group is hostile to the minorities, the lot of minorities is bound to become un-enviable There can be no substitute for a sense of fair play on the part of the majority and a corresponding obligation on the part of the minorities to fit themselves in as elements vital to the integrated and ordered progress of the State"

I only wish that there should be realisation of this obligation of the majority and there should be realisation of the duty of the minority to fit itself into an integrated state of social and political life of India.

Mr. Deputy-Speaker: Further discussion on this motion will be taken up the next day The House shall now take up the next item

---

15.03 hrs

MOTION RE ANNUAL REPORT OF THE EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION

Shri Narayanankutty Menon (Mukandapuram) Mr Deputy Speaker, Sir, I beg to move

> That this House takes note of the Annual Report of the Employees' State Insurance Corporation for the year, 1958-59, along with the Revised Estimates for 1958-59 and Budget Estimates for 1959-60, laid on the Table of the House on the 14th August, 1959

In May, 1958, when we were discussing the previous report of the Employees' State Insurance Corporation the hon Labour Minister painted on the canvas a rosy picture of the state of affairs to come, winding up the discussion which was full of concrete suggestions and friendly criticisms Today when we look at that canvas